International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 549-552

किशोरावस्था के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर गृह परिवेश के प्रभाव का अध्ययन

डॉ. पी. के. नायक[1], मीनाक्षी महंत[2]

[1] प्रोफेसर एवं डीन, विभागाध्यक्ष (शिक्षा शास्त्र), डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय कोटा बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

[2] एम.फिल. शोधार्थी (शिक्षा शास्त्र), डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय कोटा बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

सारांश

किशोर बालक की सामाजिक भावना प्रबल होती है। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि सबसे अधिक उसके पारिवारिक वातावरण से प्रभावित होती है अतः अभिभावकों का कर्तव्य है कि वे घर में बालकों के लिये ऐसे वातावरण का निर्माण करें कि बच्चों का सर्वांगीण विकास संभव हो सके। अभिभावकों को चाहिये कि वह अपनी संतानों चाहे वह लड़के हों या फिर लड़कियाँ दोनों को शिक्षा प्रदान करने हेतु समान अवसर उपलब्ध करवायें। अभिभावकों को अपने संतानों को सुरक्षित, विश्वस्त और सहयोगी पारिवारिक वातावरण प्रदान करना चाहिये जिससे कि उनमें अपने मित्रों एवं पारिवारिक सदस्यों के साथ समायोजन की भावना पनपे। शोधार्थी ने अपने शोध में ग्रामीण एवं शहरी विद्यालय के विद्यार्थियों में गृह परिवेश में उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पढ़ने वाले प्रभाव को समझने का प्रयास कर सके।

मूल शब्द : किशोर बालक, शैक्षिक, पारिवारिक वातावरण, शिक्षा

प्रस्तावना

शिक्षा का प्रारंभ प्रागैतिहासिक काल से ही माना जाता हैं। सर्वप्रथम मनुष्य ने वातावरण के अनुकुल ढलने एवं आचरण करने का प्रयत्न किया। मानव बुद्धि बल के आधार पर वातावरण से अनुकुलन करनें में सफल हो जाता हैं, और यही से शिक्षा का विकास प्रारंभ हो जाता हैं। मनुष्य अपने आदि युग में पशु तुल्य जीवन न जीता था। वह अपने रहने के लिए सुरक्षित स्थान (गृह) का निर्माण अवश्य करता था। परन्तु उस गृह में रहने वाले व्यक्ति आज जैसे– भावात्मक संबंध नही होते थे।

बच्चों का पालन पोषण प्रायः परिवारों में ही होता हैं। हमारे देश में बच्चों के पोषण का एक मात्र स्थान परिवार ही होते हैं। शिक्षा के नियमित जीवन व्यतीत करने का प्रशिक्षण देते हैं, जो स्वास्थ रक्षा के लिए आवश्यक होते हैं। बच्चें अपने परिवार के सदस्यों का अनुकरण कर समय से उठना, शारीरिक सफाई करना, घर की सफाई करना, समय पर भोजन करना, समय पर खेलना–कुदना, और समय पर निंद्रा लेना आदि सीखते हैं। इससे उनका शारीरिक विकास होता हैं। परिवर्तन प्रकृति का नियम हैं, जिसके संबंध में राष्ट्र कवि मैथलीशरण गुप्त ने अपने खण्ड काव्य पंचवटी में ठीक कहां हैं कि परविर्तन उन्नित हैं।

किशोरावस्था

किशोरावस्था मनुष्य के जीवन का बसंतकाल माना गया है। यह काल बारह से उन्नीस वर्ष तक रहता है, परंतु किसी किसी व्यक्ति में यह बाईस वर्ष तक चला जाता है। यह काल भी सभी प्रकार की मानसिक शक्तियों के विकास का समय है। भावों के विकास के साथ साथ बालक की कल्पना का विकास होता है। उसमें सभी प्रकार के सौंदर्य की रुचि उत्पन्न होती है और बालक इसी समय नए नए और ऊँचे ऊँचे आदर्शों को अपनाता है। किशोर बालक सदा असाधारण काम करना चाहता है।

गृह परिवेश

बालक जन्म लेने के बाद से ही अनेक परिस्थितियों का सामना करता है और विकासोन्मुख होता हुआ आगे बढ़ता है, इस प्रक्रिया में वह बहुत से अनुभव ग्रहण करता है। इस अनुभव ग्रहण करने में ही उसकी शिक्षा निहित होती है। जान लॉक ने मानवीय जीवन में शिक्षा के महत्व को स्वीकार करते हुए कहा है कि – ''पौधों का विकास कृषि से होता है और मनुष्य का शिक्षा द्वारा''। बालक की शिक्षा तथा उसका विकास जन्म होने के बाद से ही प्रारम्भ हो जाती है। घर अथवा परिवार मानव समाज के विकास की प्राचीनतम् आधारभूत इकाई का एक ऐसा समूह है जिसमें कई व्यक्ति एक साथ रहते है तथा सब एक दूसरे से माता–पिता, भाई–बहिन अथवा किसी अन्य सम्बन्ध से सम्बन्धित होते है, और इनके रहन–सहन, विचार, आचरण, संस्कृति आदि से परिवार बनता है, जो कि गृह पर्यावरण का एक हिस्सा है। अतः जन्म से ही प्रत्येक बालक को एक गृह परिवेश प्राप्त होता है, यही से उसकी शिक्षा की शुरूआत होती है, इसलिये परिवार को बालक की प्रथम पाठशाला कहा जाता है और गृह वातावरण को बालक के सर्वांगीण विकास की आधारशिला। के। विद्यालय में प्रवेश के पूर्व बालकों को परिवार की छत्र–छाया में ही शिक्षा प्राप्त होती है, इस प्रकार परिवार अनियंत्रित अथवा सक्रिय शिक्षा का साधन है, जिसके महत्व को स्वीकार करते हुए पेस्टोलॉजी (सुलेखा, 2000 से उद्धृत) का कथन है –''कुटुम्ब शिक्षा का सर्वश्रेष्ठ स्थान है एवं बालक का प्रधान विद्यालय है।''

शैक्षिक उपलब्धि

शैक्षिक विकास उसे कहते है जो एक विशेष वर्ष में रहकर बालकों को अध्ययन करने हेतु तैयार किया जाता है तथा उस वर्ष के अंत में बालकों की परीक्षा लेकर यह ज्ञात किया जाता है। कि वह पूरे वर्ष के पाठ्यक्रम का कितना ज्ञान प्राप्त कर सके है।

कुप्पू स्वामी के अनुसार

''शैक्षिक विकास, वह साधन हैं जिसमें बालकों को ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में दिये गये प्रशिक्षणों के परिणामों को मूलयांकन किया जाता हैं।''

अध्ययन का औचित्य

आज हमारे देश में किशोरावस्था में शिक्षा के उद्देश्यों को सामाजिक और नैतिक विकास के उद्देश्यों से अलग करके समझा जाता हैं। प्रत्येक विद्यालय में इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अनेंक कार्य किये जाते हैं। इन कार्यो में राष्ट्रगान का सम्मान, विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों का सम्मान एवं अंतराष्ट्रीय महत्व की भाषाओं का ज्ञान मुख्य हैं। विद्यालय इन कार्यो को तब तक पूरा नही कर सकता, जब तक इसके लिए परिवार एवं शिक्षक की सहमति और सहयोग प्रदान नही करेगा। शैक्षिक विकास की दृष्टि से आधुनिक युग की आवश्यकता के अनुसार बच्चों की शिक्षा में परिवार का क्या योगदान हैं? क्या सभी परिवार अपने बच्चों की शिक्षा पर यथोचित सहयोग देने में सफल हैं ? परिवारों की शैक्षणिक योग्यता का प्रभाव किशोरावस्था के छात्रों की शैक्षिक विकास पर पड़ता हैं ? इसी समस्या के समाधान के लिए इस लघुशोध की आवश्यकता महसुस की गई।

समस्या कथन

''किशोरावस्था के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर गृह परिवेश के प्रभाव का अध्ययन।''

प्रयुक्त पदों की क्रियात्मक परिभाषा

- किशोरावस्था –किशोरावस्था से तात्पर्य 13 से 19 वर्ष के बालकों से है। किशोरावस्था वह अवस्था है जिसमें विद्यार्थियों में अत्याधिक शिक्षा ग्रहण एवं परिवर्तन का अवसर प्राप्त होता है, जिसमें विद्यार्थियों की रूचियों के अनुसार उन्हे शिक्षा दी जाती है।
- शैक्षिक उपलब्धि – विद्यार्थी स्कूल में रहकर जो कुछ भी ज्ञान प्राप्त करता है, उसे उसकी शैक्षिक उपलब्धि कहते हैं। यह उपलब्धि किस सीमा तक प्राप्त हुई इसे जानने के लिये जो परीक्षण किये जाते हैं, उसे शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण कहा जाता है।
- गृह परिवेश – जब विद्यार्थी अपने निवास स्थान के आस–पास के क्षेत्रों में के व्यक्तित्व एवं शैक्षिक विकास करता है। उसे ही गृह परिवेश कहते है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. किशोरावस्था के विद्यार्थियों के गृह परिवेश का उनके शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. किशोरावस्था के छात्रों के गृह परिवेश का उनके शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. किशोरावस्था के छात्राओं के गृह परिवेश का उनके शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. शहरी किशोरावस्था के छात्र एवं छात्राओं के गृह परिवेश का उनके शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. ग्रामीण किशोरावस्था के छात्र एवं छात्राओं के गृह परिवेश का उनके शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनायें

$H0_1$ किशोरावस्था के विद्यार्थियों के गृह परिवेश का उनके शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

$H0_2$ किशोरावस्था के छात्रों के गृह परिवेश का उनके शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

$H0_3$ किशोरावस्था के छात्राओं के गृह परिवेश का उनके शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

$H0_4$ शहरी किशोरावस्था के छात्र एवं छात्राओं के गृह परिवेश का उनके शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

$H0_5$ ग्रामीण किशोरावस्था के छात्र एवं छात्राओं के गृह परिवेश का उनके शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

अध्ययन का परिसीमन

शोध समस्या का शीर्षक ''किशोरावस्था के विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास पर गृह वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना हैं।''

क्षेत्र – बिलासपुर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र को अध्ययन हेतु परिसीमित किया गया है।

स्तर – कक्षा 9वीं तक के विद्यार्थियों को लिया गया है।

आयु– 14 वर्ष से 16 वर्ष तक की आयु सीमा तक सीमित किया गया है।

शोध विधि

इस अध्ययन को पूरा करने के लिए शोध में ''सर्वेक्षण विधि'' का प्रयोग किया गया हैं।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में बिलासपुर जिले के कक्षा 9वीं में से 120 अध्ययनरत विद्यार्थियों का चयन किया गया है। जिसमें 60 छात्र एवं 60 छात्राएँ है।

चरांक

स्वतंत्र चर – गृह परिवेश

आश्रित चर – शैक्षिक उपलब्धि

प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत लघुशोध हेतु शोधार्थी द्वारा डॉ. करूणा शंकर मिश्रा द्वारा निर्मित HEI-MK (गृह पर्यावरण) मापनी का प्रयोग किया गया है। शैक्षणिक उपलब्धि मापनी (CAT) के लिए डॉ. पी. के. नायक द्वारा निर्मित प्रश्नावली को लिया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकी विधि

प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय विधियॉ मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, प्रमाणिक त्रुटि, टी–मूल्य परीक्षण, स्वतंत्र कोटी द्वारा किया गया हैं।

निष्कर्ष

$H0_1$ किशोरावस्था के विद्यार्थियों के गृह परिवेश का उनके शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

तालिका 1

S. No.	leqg	N	माध्य मान	SD	S_{ED}	t-test Value	सारणीगत मान (118)	परिणाम
1.	उच्च गृह परिवेष का षैक्षिक उपलब्धि	60	72.083	8.34	1.52	4.06	0.05 = 1.98	अस्वीकृति
2.	निम्न गृह परिवेष का षैक्षिक उपलब्धि	60	65.91	8.32			0.01 = 2.61	

निष्कर्ष

किशोरावस्था के विद्यार्थियों के गृह परिवेश का उनके शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया।

$H0_2$ किशोरावस्था के छात्रों के गृह परिवेश का उनके शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

तालिका 2

S. No.	समुह (छात्रों)	N	माध्य मान	SD	SED	t-test Value	सारणीगत मान (58)	परिणाम
1.	उच्च गृह परिवेष	30	72.33	8.65	2.23	2.91	0.05 = 2.00	अस्वीकृति
2.	निम्न गृह परिवेष	**30**	**65.84**	**8.7**			0.01 = 2.66	

निष्कर्ष

किशोरावस्था के छात्रों के गृह परिवेश का उनके शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया।

$H0_3$ किशोरावस्था के छात्राओं के गृह परिवेश का उनके शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

तालिका 3

S. No.	समुह (छात्राओं)	N	माध्य मान	SD	SED	t-test Value	सारणीगत मान (58)	परिणाम
1.	उच्च गृह परिवेष	30	72.5	7.98	1.97	3.63	0.05 = 2.00	अस्वीकृति
2.	निम्न गृह परिवेष	30	65.34	7.3			0.01 = 2.66	

निष्कर्ष

किशोरावस्था के छात्राओं के गृह परिवेश का उनके शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया।

$H0_4$ शहरी किशोरावस्था के छात्र एवं छात्राओं के गृह परिवेश का उनके शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

तालिका 4

S. No.	समुह (छात्र–छात्राओं)	N	माध्य मान	SD	SED	t-test Value	सारणीगत मान (58)	परिणाम
1.	उच्च गृह परिवेष	30	74.33	8.35	2.05	2.43	0.05 = 2.00	स्वीकृति
2.	निम्न गृह परिवेष	30	69.34	7.6			0.01 = 2.66	

निष्कर्ष

शहरी किशोरावस्था के छात्र एवं छात्राओं के गृह परिवेश का उनके शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

$H0_5$ ग्रामीण किशोरावस्था के छात्र एवं छात्राओं के गृह परिवेश का उनके शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

तालिका 5

S. No.	समुह (छात्र–छात्राओं)	N	माध्य मान	SD	SED	t-test Value	सारणीगत मान (58)	परिणाम
1.	उच्च गृह परिवेष	30	69.0	9.15	2.04	2.86	0.05 = 2.00	अस्वीकृति
2.	निम्न गृह परिवेष	30	63.16	6.5			0.01 = 2.66	

निष्कर्ष

ग्रामीण किशोरावस्था के छात्र एवं छात्राओं के गृह परिवेश का उनके शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया।

शैक्षिक महत्व

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि सबसे अधिक उसके पारिवारिक वातावरण से प्रभावित होती है अतः अभिभावकों का कर्तव्य है कि वे घर में बालकों के लिये ऐसे वातावरण का निर्माण करें कि बच्चों का सर्वांगीण विकास संभव हो सके। इस लिए शोधकर्ता ने अपने शोध हेतु शैक्षणिक महत्व निम्न है–

1. इस शोध अध्ययन से शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के प्रति शिक्षण उपलब्धि के भ्रम को दूर किया जा सकता है।
2. इस शोध द्वारा छात्र–छात्राओं में पारिवारिक वातावरण की समस्यात्मक भावनाओं को दूर किया जा सकता है।
3. छात्रों में शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के गलत प्रभाव को दूर किया जा सकता है।
4. छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले पारिवारिक वातावरण की समस्या को दूर किया जा सकता है।
5. छात्रों में शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के प्रति जागृत होने वाली भ्रांतियों को दूर किया जा सकता है।

सुझाव

1. छात्रों के पारिवारिक परिवेश एवं शैक्षणिक उपलब्धि में समायोजित करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।
2. अभिभावकों को चाहिए कि वे अपने पारिवारिक वातावरण को व्यवस्थित रखे।
3. विद्यालय में विद्यार्थियों को यह शिक्षा प्रदान करनी चाहिए िकवे अपने पारिवारिक वातावरण और अपने शैक्षिक विकास में सामंजस्य स्थापित करें।
4. पालकों का यह दायित्व बनता है कि छात्रों के शैक्षिक विकास को प्रभावशाली बनाने के लिए पारिवारिक वातावरण में संतुलन और शान्ति स्थापित करें।
5. विद्यार्थियों को अपने पारिवारिक वातावरण से सामंजस्य स्थापित कर अपने शैक्षिक विकास को प्रोत्साहित करना चाहिए।

उपसंहार

किशोर बालक सदा असाधारण काम करना चाहता है। वह दूसरों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करना चाहता है। जब तक वह इस कार्य में सफल होता है, अपने जीवन को सार्थक मानता है और जब इसमें वह असफल हो जाता है तो वह अपने जीवन को नीरस एवं अर्थहीन मानने लगता है। किशोर बालक के डींग मारने की प्रवृत्ति भी अत्यधिक होती है। वह सदा नए नए प्रयोग करना चाहता है। इसके लिए दूर दूर तक घूमने में उसकी बड़ी रुचि रहती है। बालक की शिक्षा तथा उसका विकास जन्म होने के बाद से ही प्रारम्भ हो जाती है। घर अथवा परिवार मानव समाज के विकास की प्राचीनतम् आधारभूत इकाई का एक ऐसा समूह है जिसमें कई व्यक्ति एक साथ रहते है तथा सब एक दूसरे से माता–पिता, भाई–बहिन अथवा किसी अन्य सम्बन्ध से सम्बन्धित होते है, और इनके रहन–सहन, विचार, आचरण, संस्कृति आदि से परिवार बनता है, जो कि गृह पर्यावरण का एक हिस्सा है। अतः जन्म से ही प्रत्येक बालक को एक गृह परिवेश प्राप्त होता है, यही से उसकी शिक्षा की शुरूआत होती है, इसलिये परिवार को बालक की प्रथम पाठशाला कहा जाता है और गृह वातावरण को बालक के सर्वांगीण विकास की आधारशिला। बालक परिवार के व्यवहार, आचार–विचार, नैतिकता, आदि अपने परिवार की मान्यताओं के अनुसार निर्मित एवं विकसित करता है। शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना हैं, परन्तु इसमें गृह वातावरण की भूमिका मुख्य है। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि सबसे अधिक उसके पारिवारिक वातावरण से प्रभावित होती है अतः अभिभावकों का कर्तव्य है कि वे घर में बालकों के लिये ऐसे वातावरण का निर्माण करें कि बच्चों का सर्वांगीण विकास संभव हो सके। अभिभावकों को चाहिये कि वह अपनी संतानों चाहे वह लड़के हों या फिर लड़कियाँ दोनों को शिक्षा प्रदान करने हेतु समान अवसर उपलब्ध करवायें। अभिभावकों को अपने संतानों को सुरक्षित, विश्वस्त और सहयोगी पारिवारिक वातावरण प्रदान करना चाहिये जिससे कि उनमें अपने मित्रों एवं पारिवारिक सदस्यों के साथ समायोजन की भावना पनपे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कपिल, एच. के. 1970 ''अनुसंधान विधियां'' हरि प्रसाद भार्गव, आगरा।
2. शर्मा, आर.ए. 1985 ''शिक्षा अनुसंधान'' लायल बुक डिपों, मेरठ।
3. सिंह, एम.पी. 1988 ''सांख्यिकीय सिद्धान्त एवं व्यवहार'' एस. चन्द एण्ड कंपनी दिल्ली।
4. अस्थाना, डॉ. विनि श्रीवास्तव, विजया एवं अस्थाना, कु. निधि 1998 ''शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकीय'' अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, पृष्ठ संख्या– 812।
5. लाल जोशीः ''शिक्षा मनोविज्ञान एवं प्रारंभिक सांख्यिकीय।''
6. पाण्डेय कल्पना एवं एस. एस. श्रीवास्तवः ''शिक्षा मनोविज्ञान एवं भारतीय एवं पश्चात् दृष्टि।''
7. अस्थाना विपिन, अस्थाना श्वेता ''मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्याकंन'' विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
8. शर्मा एच.एम. ''गृह पर्यावरण और शैक्षणिक संस्थान'' प्रिया साहित्य मंदिर आगरा।
9. डॉ. पाण्डेय आर.पी. ''विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का अध्ययन'', गायत्री पुस्तक मंदिर आगरा – 2
10. श्रीवास्तव वी. के.. लघुशोध प्रबंध 2003, ''शासकीय तथा अशासकीय उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयों की शैक्षिक उपलब्धि व्यवस्था तथा शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।''
11. जैन रतन चन्द्र लघु शोध प्रबंध (1987–88) ''प्रशासकीय एवं पूर्णतया स्वचालित, अप्रशायकीय शालाओं के पूर्व माध्यमिक कक्षाओं की शैक्षिक उपलब्धि का विश्लेषणात्मक अ**ध्ययन।''**